SELCO

Date :

HISTORY (H)

PAPER- III

B.A - II

(B.) polity - Nature of Regional politics.

चोल कालीन केन्द्रीय प्रशासन

Cholas - Central Administration

⇒ राष्ट्र

↓

मण्डलम (प्रांत)

↓

वलनाडु

↓

नाडु

↓

कोट्टम

↓

गाँव

Scanned with CamScanner

Date :

केन्द्रीय प्रशासन का प्रमुख राजा का होता था तथा साथ ही शासन का सर्वोच्च अधिकारी भी होता था। उसका पद वंशानुगत होता था तथा ज्येष्ठ पुत्र ही राजा का उत्तराधिकारी होता था। राजा चक्रवर्तिगाल, त्रिकाल, सम्राट जैसे उच्च सम्मानजनक उपाधि धारण करते थे।

राजा की सहायता के लिए दरबारी अधिकारी की समाची जो उदन कुटरन थी। केन्द्रीय अधिकारी दो श्रेणियों में विभाजन थे, पहले श्रेणी के उच्च स्तरीय अधिकारी पेरुदेम और दूसरे श्रेणी के निम्न स्तरीय अधिकारी शिरुदनम कहलाते थे।

चोल साम्राज्यों मंडलों या प्रांतों में विभाजित था, जिसकी संख्या 8 या 9 थी। मंडलम वलनाडु और नाडु में बँटे होते थे।

Scanned with CamScanner

SELCO

Date :

⇒ राजस्व प्रशासन :

चोल राज्य की आय का प्रमुख साधन भूमि कर था। भूमि कर ग्राम-सभाएँ एकत्र करके सरकारी कोष में जमा करती थी। राज राज प्रथम और कुलोत्तुंग प्रथम के समय में क्रमशः एक या दो बार भूमि की माप करवायी। कर का 1/2 से 1/4 भाग तक होता था।

→ राजस्व विभाग की पंजिका को वरित्योतगा कहा कहा जाता था जिसमें सभी प्रकार के विवरण दर्ज किये जाते थे।

→ कृषकों को यह सुविधा थी कि वे भूमि कर नगद या अनाज के रूप में चुका सकते थे।

Scanned with CamScanner

Date :

⇒ चोलों के स्वर्ण सिक्के कलंजु या पोन कहे जाते थे।

→ अकाल आदि दैविय आपदाओं में भूमि माफ कर दिया जाता था।

→ दक्षिण भारत में तलाब ही सिंचाई के प्रमुख साधन थे।

– लोगों के कर न देने पर दंड की व्यवस्था थी - जैसे- पानी में डुबो देने और धूप में खड़ा कर देने का उल्लेख मिलता है।

→ बकाये कर पर ब्याज भी लिया जाता था।

→ भूमि कर के अतिरिक्त व्यापारिक वस्तुओं, विभिन्न व्यवसायों, खानों, वनों, उत्सवों आदि पर भी कर लगाते थे।

→ राज्य की आय का व्यय अधिकारी वेतन, निर्माण कार्यों, दान, यज्ञ

Scanned with CamScanner

आदि पर होता था।

→ **सैन्य प्रशासन :**

चोल राजाओं ने एक विशाल संगठित सेना का निर्माण किया था। चोल शासक कुशल योद्धा थे और व्यक्तिगत रूप से युद्ध में भाग लिया करते थे। अश्व, गज, रथ एवं पैदल सैनिकों के साथ एक अत्यंत शक्तिशाली नौ सेना थी।

सैनिकों का वेतन में राजस्व का एक भाग या भूमि देने की प्रथा थी। लेखों में बड़पेई (पैदल सैनिक), विल्लिगल (धनुर्धारी सैनिक), कुडीरैइ-च्चेवगर (अश्वरोही सैनिक) आदि का उल्लेख मिलता है।

Date : _____

## ⇒ न्याय प्रशासन :

→ न्याय के लिए नियमित न्यालयों का उल्लेख मिलता है जैसे धर्मासन (राजा का न्यालय) तथा धर्मासन भट्ट।

→ न्यालय के पंडितों (न्यायधीशों) को धर्मभट्ट कहा गया। जिनसे परामर्श से विवादों का निर्णय किया जाता था।

→ दीवानी एवं फौजदारी मामलों में अंतर स्पष्ट नहीं है।

→ नरबध तथा हत्या के लिए दंड व्यवस्था थी कि अपराधी पड़ोस के मंदिर में अखंड दीप जलवाने का प्रबंध करे। वस्तुतः यह प्रकार का प्रायश्चित था किन्तु मृत्यु दंड दिये जाने के भी उदाहरण प्राप्त हुए हैं।

Scanned with CamScanner

SELCO

Date :

⇒ राजद्रोह भयंकर अपराध था। जिसका निर्णय स्वयं राजा द्वारा किया जाता था। इसमें अपराधी को मृत्युदंड के साथ ही साथ उसकी संपत्ती को जप्त कर लिया जाता था। 13 वीं सदी के चीनी लेखक चाउ-जू कुआ ने चोल दंड व्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की है।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. College Tajpur.

Scanned with CamScanner